अटलांटिक महासागर की नितल

अटलांटिक महासागर विश्व का दूसरा बड़ा महासागर है। इसका क्षेत्रफल 8.2 करोड़ वर्ग कि० मी० है और इसकी आकृति अंग्रेजी भाषा के 'S' की भाँति है। यह सबसे अस्थिर महासागर है। उत्तर में डेविस स्ट्रेट से दक्षिण में अंटार्कटिक महासागर तक तथा पश्चिम में उ० तथा द० अमेरिका एवं पूर्व में यूरोप तथा अफ्रीका के बीच स्थित है। विषुवत रेखा के समीप यह महासागर सबसे संकरा है।

अटलांटिक महासागर की नितल को चार भागों में बांटा जा सकता है-

1) महाद्वीपीय मग्नतट — अटलांटिक महासागर के दोनों तटों पर पर्याप्त महाद्वीपीय मग्न तट का विकास हुआ है। कहीं-कहीं इसकी चौड़ाई 80 कि०मी० तक है। बिस्के की खाड़ी से उत्तमाशा अंतरीप के बीच अफ्रीका के तट के समीप संकरा है। वहीं उ०प० यूरोप के पास यह 240-400 कि०मी० तक चौड़ा है। इसी तरह न्यूफाउंडलैंड के चारों ओर विस्तृत महाद्वीपीय मग्न तट का विस्तार है। इस महासागर में निमग्न तट पर अनेक द्वीप स्थित हैं। इनमें ब्रिटिश द्वीप समूह, न्यूफाउंडलैंड, सेंट हेलना, सैण्डविच, कनारी, केप वर्डे, शेटलैंड, फॉकलैंड, जॉर्जिया मुख्य हैं।

मध्य अटलांटिक कटक — अटलांटिक महासागर में उत्तर में आइसलैंड से दक्षिण में बोवेट द्वीप तक 'S' के आकार में 14000 कि० मी० की लम्बाई में फैला है तथा कहीं-कहीं सागर तल से 4000 मीटर से नीचे नहीं जाता है।

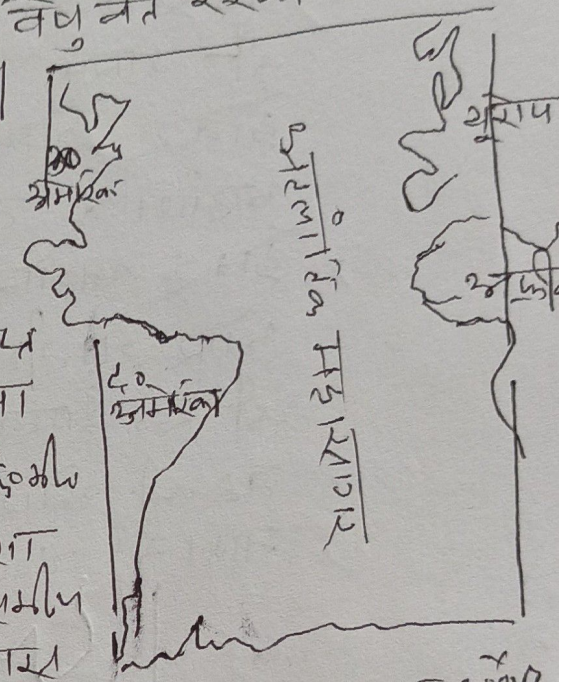

यद्यपि यह कटक कभी पश्चिम तो
ओर झुक जाता है। लेकिन इसकी
बनी रहती है भूमध्य रेखा के
को डॉल्फिन और दक्षिण में डरो-
कहते हैं। आइसलैण्ड और स्कॉटलै
कटक को वाइविल टामसन कटक
के दक्षिण में कटक चौड़ा हो जाता है
पठार कहते हैं। 50° उ० अक्षांश के
की शाखा न्यूफाउण्डलैण्ड उभार के
होकर न्यूफाउण्डलैण्ड तक चली गयी
अक्षांश के द० मध्यवर्ती कटक से
होकर अनोर उभार के नाम से अ
ओर जाती है। 40 द० अक्षांश के
की एक शाखा वालविस कटक अफ्री
तट की ओर तथा दूसरी शाखा रायो
नाम से द० अमेरिका की ओर मुड़

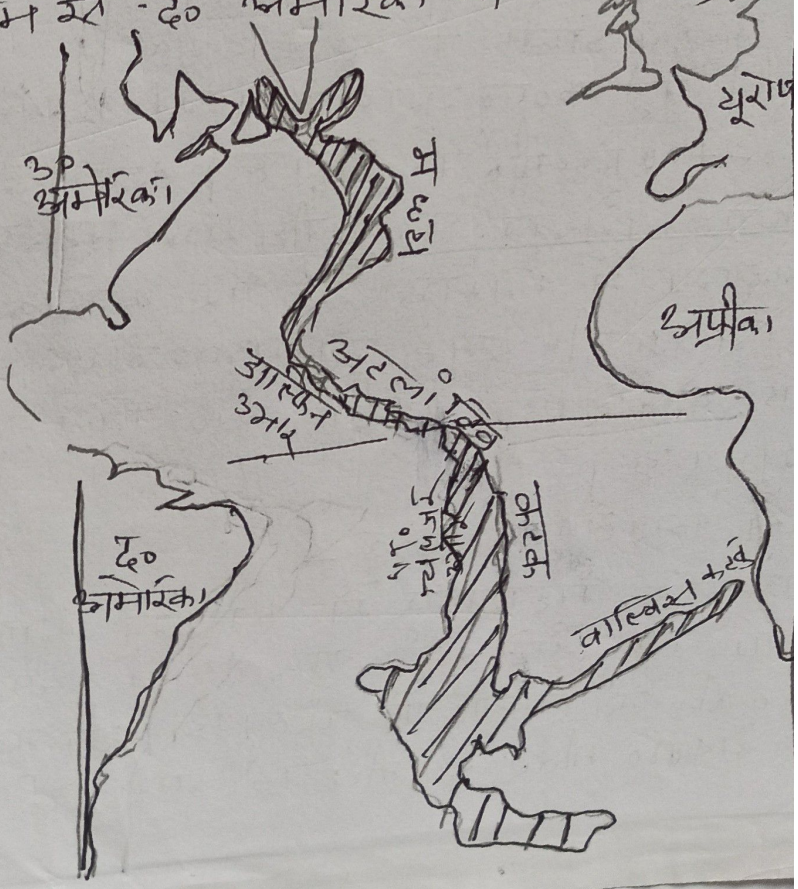

ी –

मध्यवर्ती अटलांटिक कटक द्वारा अटलांटिक महासागर दो विस्तृत द्रोणियों में विभाजित है। ये दो विस्तृत द्रोणियों में भी पुनः कई छोटी छोटी द्रोणियाँ पायी जाती हैं, जिनमें निम्न प्रमुख हैं –

लेब्राडोर द्रोणी – उ० में ग्रीनलैण्ड के जलमग्न तट तथा द० में न्यूफाउण्डलैण्ड उभार के बीच 4000 मीटर की गहराई तक 40° से 50° उ अक्षांश के बीच फैली है।

उ० अमेरिकी द्रोणी – अटलांटिक महासागर की सबसे बड़ी द्रोणी है। इसका विस्तार 12° से 40° उत्तरी अक्षांश के मध्य फैला है। इसकी गहराई 5000 मीटर है।

ब्राजील द्रोणी – द० अटलांटिक महासागर में भूमध्य रेखा से 30° द० अक्षांश तक फैला है।

स्पेनिश द्रोणी – मध्य अटलांटिक कटक के पूर्व में आइबेरियन प्रायद्वीप के पास स्थित स्पेनिश द्रोणी का विस्तार 30° से 50 उत्तरी अक्षांश तक लगभग 5000 मीटर की गहराई तक है।

उ० तथा द० कनारी बेसिन – दो वृत्ताकार द्रोणियों से मिलकर बनी है।

केप वर्डे द्रोणी – मध्य अटलांटिक कटक तथा अफ्रीका के मध्य 10° से 23½ उत्तरी अक्षांश के बीच 5000 मीटर की गहराई तक विस्तृत है।

इनके अलावा इस महासागर में गायना द्रोणी, अंगोला द्रोणी, केप बेसिन तथा

अंगुलाकार होती है।

गर्त - अटलांटिक महासागर में 19 महासागरीय गर्त का पता चला है। मरे महोदय के अनुसार इनकी गहराई 3000 फैदम से अधिक है। प्रमुख गर्तों में नरेस, पोर्टोरिको, रोमांश, वाल्डिविय, बुचानन, मोसले, चुन आदि गर्त हैं।